आधुनिक आलाप विधि

आधुनिक काल ख्याल का युग है। जिस प्रकार मध्य काल में ध्रुपद का प्रचलन था, उसी प्रकार आधुनिक काल में ख्याल का प्रचलन है। आजकल ध्रुपद, धमार, ठुमरी, तराना, टप्पा भी गाये जाते हैं, किन्तु ख्याल की तुलना में से कम गाये जाते हैं। अधिकतर लोग ख्याल गाते हैं। ध्रुपद गायन में गीत के पूर्व नोम-तोम का विस्तृत आलाप चार खण्डों में किया जाता है। इसका मुख्य कारण यह कि ध्रुपद में लयकारी दिखाई जाती है और उसके बीच में आलाप की कोई गुन्जाइश नहीं रहती, इसलिये गीत के प्रारम्भ में ही खूब विस्तृत आलाप किया जाता है। ख्याल गायन के बीच में आलाप की बहुत गुन्जाइश रहती है, इसलिये अधिकांश गायक ख्याल के प्रारंभ में बहुत थोड़ा आलाप करते हैं। उनका कहना है कि ख्याल के पूर्व विस्तृत आलाप का तात्पर्य यह होगा कि ख्याल के बीच में आलाप लेने से स्वर समूहों की पुनरावृत्ति होगी, चाहे आकार में आलाप हो।

Scanned with CamScanner

अथवा गीत के शब्दों को लेकर। वास्तव में यह तर्क उचित भी मालूम पड़ता है। लेखक के मतानुसार केवल राग-सूचक स्वर-समूहों का प्रयोग प्रारंभिक आलाप के रूप में किया जाना चाहिये। ख्याल के पूर्व जो संगीतज्ञ आलाप करते हैं, उनकी मुख्य दो विधियां हैं आकार में नोम तोम, नोम तोम का आलाप लगभग ध्रुपद के समान किया जाता है। नोम तोम के आलाप को चार भागों में विभाजित करते हैं - स्थाई, अन्तरा, संचारी और आभोग। आलाप के प्रथम भाग में सप्तक के पूर्वांग और मन्द्र सप्तक में तथा द्वितिय भाग में सप्तक के उत्तरांग और तार सप्तक में आलाप करते हैं। प्रथम भाग का आलाप षड्ज अथवा उसके पास के स्वरों से और दूसरे भाग का प्रत्येक आलाप पंचम अथवा उसके पास के स्वरों से प्रारंभ होता है। इन दोनों भागों में ~~अमक~~ मींड और स्वरों की गंभीरता पर बल दिया जाता है। आलाप कोई निश्चित विधि नहीं है, गायक अपनी इच्छानुसार परंपरागत विधि में थोड़ा परिवर्तन कर लेता है।